मधुमक्खियां गायब हो रही हैं

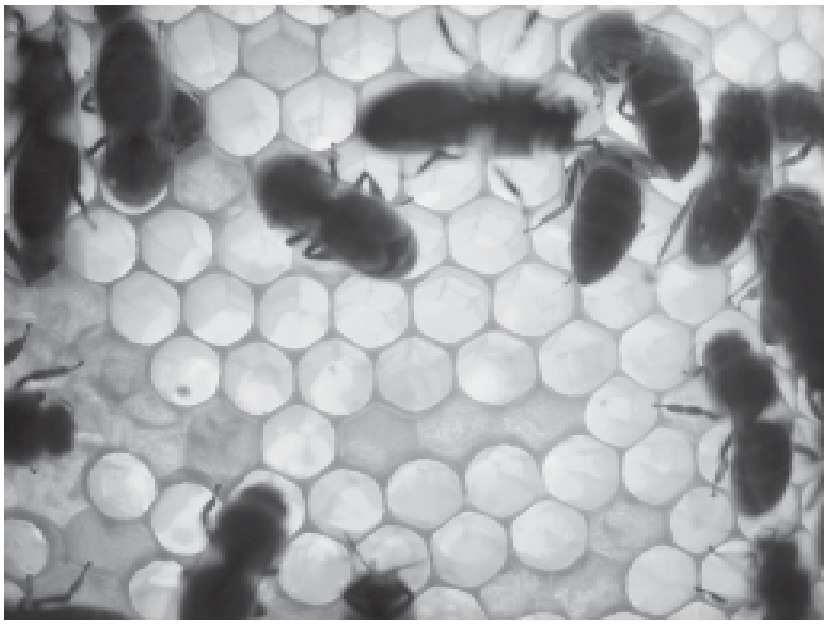

युरोप के देशों में किए गए एक ताज़ा सर्वेक्षण से पता चला है कि वहां के अधिकांश देशों में प्रति वर्ष मधुमक्खी छत्तों के बरबाद होने की दर 30 प्रतिशत तक है। मधुमक्खियां सिर्फ शहद नहीं बनातीं। वे कई फसलों में परागण का महत्वपूर्ण काम भी करती हैं। परागण क्रिया के बाद ही फल व बीज बनते हैं। एक अनुमान के मुताबिक दुनिया भर में मधुमक्खियों द्वारा परागित फसल उत्पादन का मूल्य 200 अरब डॉलर (करीब 10000 अरब रुपए) है।

ये खबरें तो पिछले कुछ वर्षों से लगातार मिलती रही हैं कि मधुमक्खियों के छत्ते ढहने की समस्या (कॉलोनी कोलेप्स डिसऑर्डर) बहुत बड़े पैमाने पर हो रहा है लेकिन ताज़ा सर्वेक्षण ने जो आंकड़े पेश किए हैं वे सचमुच आंखें खोल देने वाले हैं।

ब्रसेल्स (बेल्जियम) में 7 अप्रैल को आयोजित एक उच्च स्तरीय बैठक में मधुमक्खी स्वास्थ्य सम्बंधी युरोपीय संघ संदर्भ प्रयोगशाला की ओर से बताया गया कि उनके द्वारा युरोप के 17 देशों में किया गया सर्वेक्षण बताता है कि मधुमक्खी छत्तों के ढहने की घटनाओं ने 33 प्रतिशत तक छत्तों को प्रभावित किया है। यह सर्वेक्षण 2012 और 2013 में 8500 स्थानों के मुआयनों की मदद से किया गया था।

प्रयोगशाला में रोग वैज्ञानिक मारी-पियरे चोज़ाट का कहना है कि वैसे तो इस बात का कोई मानक नहीं है कि कितने छत्तों का ढहना स्वीकार्य माना जाए मगर कुछ लोग 10 प्रतिशत को स्वीकार्य मानते हैं और कुछ लोग कहते हैं कि 15 प्रतिशत सामान्य है। चोज़ाट के मुताबिक यदि 15 प्रतिशत के उदार मानक को सामान्य मान लिया जाए तो भी कम से कम 7 देशों में हालत इससे ज़्यादा खराब है। मगर यदि 10 प्रतिशत की कसौटी को माना जाए, तो युरोप के दो-तिहाई देशों में हालत खराब है।

वैसे ये मात्र एक वर्ष के आंकड़े हैं और शायद किसी लंबी अवधि की प्रवृत्ति की ओर इशारा नहीं करते मगर फिर भी चिंता का विषय तो है। इसी बैठक में एक अन्य पर्चे में बताया गया कि यूएस में भी मधुमक्खी छत्तों के बरबाद होने की रफ्तार पिछले 7 में से 5 वर्षों में 30 प्रतिशत से अधिक रही है।

भारत के बारे में ऐसे व्यवस्थित आंकड़ों का अभाव है। वैसे मधुमक्खियों के छत्ते ढहने के लिए जिन कारकों को ज़िम्मेदार माना जाता है, उन्हें देखते हुए लगता है कि यहां भी हालत बहुत अच्छी नहीं होगी। मधुमक्खी छत्तों को प्रभावित करने वाले कारकों में परजीवियों का संक्रमण, कीटनाशकों का इस्तेमाल और खेती के बदलते तौर-तरीकों को माना गया है। इसके अलावा मधुमक्खियों के लिए उपयोग किए जाने वाले चंद एंटीबायोटिक भी इसके लिए दोषी हैं। ***(स्रोत फीचर्स)***